नमक

एक रूसी लोक-कथा

पुनर्कथनः जेन लैंगटन, चित्रः इल्से प्लूम
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

रूस के एक छोटे टापू से तीन भाइयों को उनके पिता ने बाहरी दुनिया में अपनी-अपनी किस्मत आज़माने भेजा। बड़े बेटे फ्योदोर को सबसे बड़े जहाज़ में लोमड़ियों, भेड़ियों ओर नेवलों की कीमती खालों के साथ उत्तर दिशा के देशों की ओर; मंझले बेटे वैसली को तेज़ चलने वाले जहाज़ में चमचमाती बर्फ के साथ दक्षिण में बसे शहरों की ओर; और सबसे छोटे बेटे ईवान को, जिसे उसके पिता निहायत बुद्धू मानते थे, एक छोटे से जहाज़ में लकड़ी से बने चम्मचों के साथ भेजा गया।

फ्योदोर और वैसली इस उम्मीद से अपने सफ़र पर निकले कि वे ढ़ेर दौलत कमा कर अमीर हो जाएंगे। पर ईवान अपने ख़यालों और सपनों में खोया रहने वाला इन्सान था। वह अपने घर से यह पूछता निकला कि "आकाश कितना ऊँचा होता है?" और "दुनिया गोल है या चपटी?"

फ्योदोर और वैसली के हाथ केवल विपदा और तबाही लगी। पर ईवान को मिला एक नमक का पहाड़ - नमक, जो जीवन को सरस बना देता है। ईवान ने एक ज़ार को अपना नमक बेचा और बदले में सोना, चाँदी और अनमोल रत्नों से भरे पीपे पाए।

जब तूफ़ान ने फ्योदोर और वैसली के जहाज़ों को नष्ट कर दिया, ईवान ने दोनों को बचाया और अपनी दौलत अपने भाइयों के साथ बांटने का सुझाव दिया। पर दोनों बड़े भाईयों के लालच ने उन्हें ईवान को धोखा देने पर उकसाया। उन्होंने ईवान को जहाज़ से नीचे फेंक दिया। पर ईवान आसानी से हारा नहीं। खूबसूरत ज़ारेवना के प्रति उसके प्यार ने उसे अपना सफ़र पूरा करने का साहस दिया। उसे रास्ते में आई बाधाएं भी रोक नहीं सकीं।

न्यूबरी सम्मान विजेता जेन लैंगटन का रूसी शैली में ढाला गया गद्य और कैल्डेकॉट सम्मान विजेता इल्से प्लूम के मानो रत्नों से जड़े चित्र रूसी विरासत के प्रतीकों को बारीकी से प्रस्तुत करते हैं।

यह ईवान की बहादुरी, उसकी उदारता, और यह जान लेने की कहानी है कि आसमान कितना ऊँचा है और धरती गोल है या चपटी। यह कहानी बच्चों को आनन्द से भर देगी।

नमक

एक रूसी लोक-कथा

पुनर्कथनः जेन लैंगटन
चित्रः इल्से प्लूम
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लिज़ गॉर्डन को श्रद्धा और सराहना के साथ

- इल्से प्लूम

कोलिन के लिए

- जेन लैंगटन

समुद्र में एक टापू है -
न बहुत पास, न बहुत दूर।
जहाँ खड़ा है एक पेड़, जिसका शिखर सुनहला है।
इस पेड़ पर लिपटी सुनहली माला पर
बैठा है एक घुरघुराता बिल्ला।
जब वह ऊपर जाता है, गाता है एक गीत,
और जब उतरता है नीचे सुनाता है एक कहानी।
वह फिलवक़्त नीचे उतर रहा है,
उसकी कहानी है तुम्हारे सामने।

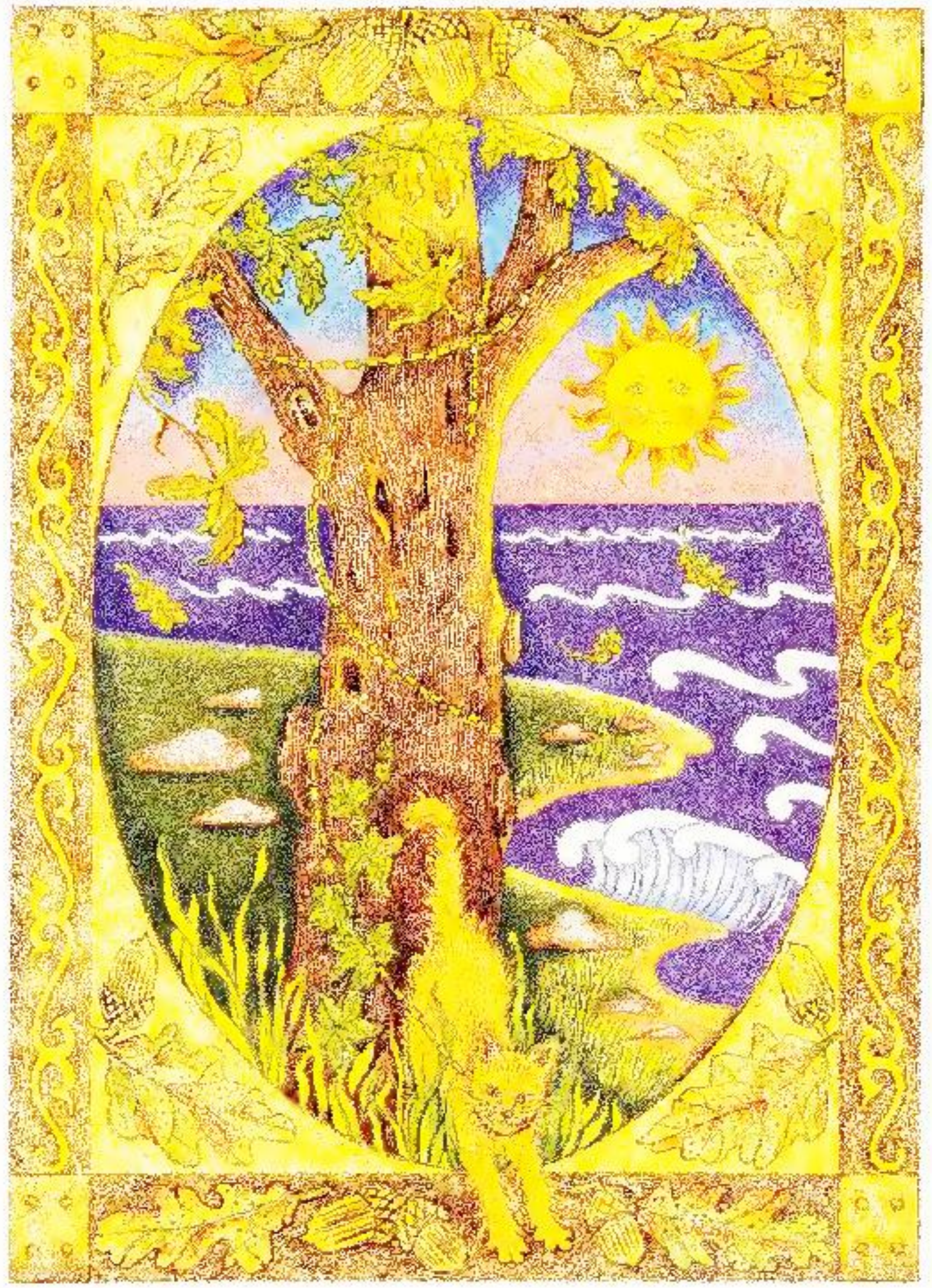

एक ज़माने में एक सौदागर था जिसके तीन बेटे थे। दो बड़े बेटे, फ्योदोर और वैसली बड़े चतुर थे। पर तीसरे को बुद्धू ईवान कहा जाता था। हालांकि वह देखने-भालने में सुन्दर था, वह ढ़ेरों बेवकूफी भरे सवाल पूछा करता था।

"दुनिया गोल है या चपटी?" उसने अपने पिता से पूछा।

"बेशक चपटी है," पिता ने खीझ कर कहा। "यह तो सब जानते हैं।"

"आसमान कितना ऊँचा है?" ईवान ने पूछा।

"गिरजे के शिखर जितना," पिता ने नाराज़ होते जवाब दिया। "अब ये सवाल करना बन्द करो। तुम सचमें निहायत बेवकूफ़ हो।"

सौदागर बड़ा धनवान था। उसके कई जहाज़ थे। वह उन्हें व्यापार करने दुनिया भर में कीमती माल के साथ भेजता था।

एक दिन उसने अपने मुलाज़िमों से कहा कि वे लोमड़ियों, भेड़ियों ओर नेवलों की खालें उसके सबसे बड़े ओर बेहतरीन जहाज़ पर लादें, और रखवाली के लिए दो चमचाती तोपों के साथ जहाज़ में जा बैठें। तब उसने अपने बड़े बेटे को बुलाया और कहा, "फ्योदोर, इन खालों को लेकर समुद्र पार उत्तरी राज्यों में ले जाओ और उन्हें सोने, चाँदी और रत्नों के बदले बेच डालो।"

इसके बाद उसने अपने सबसे तेज़ रफ्तार से चलने वाले जहाज़ पर चमचमाती बर्फ लदवाई और दूसरे बेटे से कहा, "वैसली, तुम दक्षिण के शहरों में जाओ, जहाँ मौसम गर्म होता है, और बर्फ को सोना, चाँदी और रत्नों के बदले बेच डालो। ध्यान रहे, तुम्हें तेज़ी से जाना होगा, नहीं तो बर्फ रास्ते में ही पिघल जाएगी।" उसने अपने दूसरे बेटे को रक्षा के लिए एक धारदार तलवार दी।

सौदागर का सबसे छोटा बेटा बुद्धू ईवान ऊँची मीनार पर गया। उसने वहाँ से पिता के दो जहाज़ों के पाल देखे। वे हवा में ऐसे फड़फड़ा रहे थे मानो उड़ जाने को तैयार हों। वह उन्हें तब तक देखता रहा जब तक वे ओझल न हो गए।

तब उसने सोचा कि अब मेरी बारी है। वह पिता के पास गया और बोला कि उसे भी एक जहाज़ में भेजा जाए।

"नहीं, नहीं," पिता ने कहा। "तुम निहायत बुद्धू हो। मैं तुम्हें व्यापार के लिए ज़रूरी सफ़र पर नहीं भेज सकता।"

ईवान ने पिता से मिन्नत-चिरौरी की। आख़िरकार पिता मान गए। उन्होंने उसे अपना सबसे छोटा जहाज़ दिया। पर उसमें खाल या बर्फ जैसा कीमती सामान नहीं था। उसमें सिर्फ लकड़ी की चम्मचें लदी थीं। पिता ने ईवान को अपनी रक्षा के लिए एक छोटी छुरी दी, जिसकी फलक सिर्फ इंच भर लम्बी थी।

ईवान इसीमें खुश था। वह छोटे जहाज़ में चढ़ा। जल्द ही एक नाविक मस्तूल पर चढ़ा, उसने पालें खोल दीं और मस्तूल पर एक रंग-बिरंगा झंडा लहरा दिया।

ईवान ने अपने कमरबन्द में छुरी घुसेड़ी और जेब में एक लकड़ी की चम्मच धरी। उसने खुद से कहा कि वह अब जान ही लेगा कि आसमान कितना ऊँचा है और धरती गोल है या चपटी।

छोटा जहाज़ लहरों पर डोलता बढ़ चला। समय बीता - न बहुत ज़्यादा, न बहुत कम - तब अचानक उत्तर दिशा से एक भारी तूफ़ान आया।

"हमें एक महफ़ूज़ बन्दरगाह तलाश लेना चाहिए," ईवान ने कहा। वे तुरंत ही एक टापू की ओर बढ़े, जहाँ समुद्र से ही एक सफेद पर्वत दिखाई दे रहा था।

"बड़ी अजीब बात है," नाविकों ने कहा, "यहाँ बर्फ का पहाड़ है!"

पर जब ईवान ने बर्फ में उंगली घुसा उसे चखा, वह बोल उठा, "यह तो नमक है। नमक तो लकड़ी की चम्मचों से कहीं ज़्यादा कीमती है। क्योंकि नमक के बिना जीवन में स्वाद कहाँ!"

जैसे ही तूफ़ान खत्म हुआ नाविकों ने ईवान के हुक्म के मुताबिक काम किया। जल्द ही लकड़ी की चम्मचें समुद्र में बह चलीं और खाली पीपों में नमक भर दिया गया।

ईवान का जहाज़ फिर से आगे बढ़ा, उस बन्दरगाह की तलाश में जहाँ वह नमक बेच पिता के लिए सोना, चाँदी और रत्न पा सके। और यह भी सिद्ध कर सके कि वह इतना भोंदू भी नहीं है।

कुछ ही समय बाद जहाज़ एक सुन्दर बन्दरगाह के पास पहुँचा, जहाँ का धनवान ज़ार (राजा) एक समृद्ध राज्य पर राज करता था।

ईवान ने अपनी जेब में नमक की एक छोटी थैली रखी और जहाज़ से उतर शहर की गलियों में बढ़ा। सड़क पर लोगों की भीड़-भाड़ थी। उनके बटुओं में कोपैक (रूबल का सौवां हिस्सा) खनखना रहे थे। वे तृणमणि, अदरक वाली डबलरोटी, कुकुरमुत्तों की टोकरियाँ, धार्मिक प्रतीक और पिंजड़े में कैद गाने वाले पाखी ख़रीद रहे थे। पर ईवान इस सब पर ध्यान दिए बिना सीधे ज़ार के महल की ओर बढ़ा, ताकि वह नमक बेचने की इजाज़त पा सके।

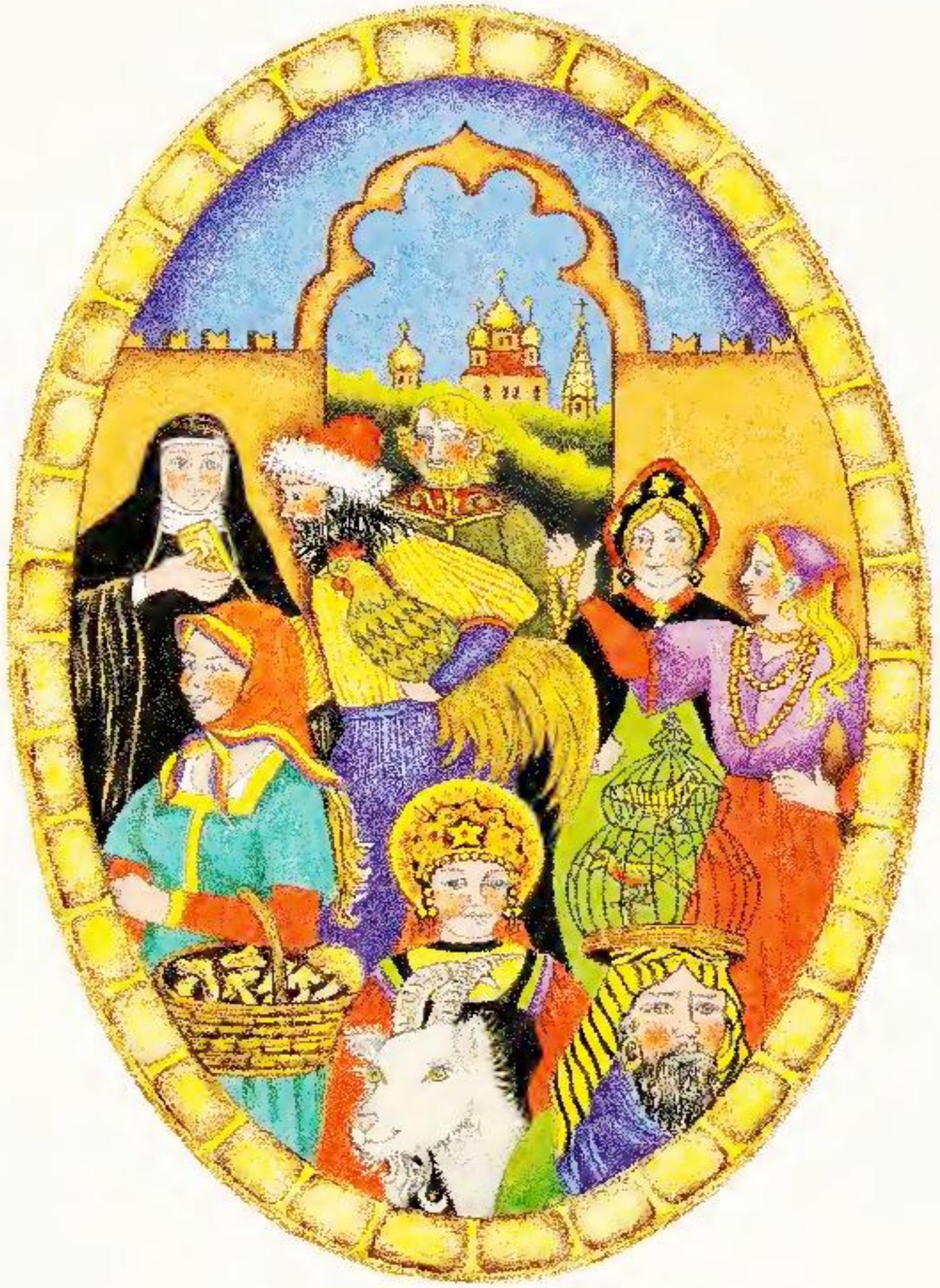

उसे ज़ार अपनी बेटी ज़ारेवना (राजकुमारी) के साथ बैठा मिला। वह बेहद खूबसूरत थी। उसके सुनहले बाल एक चोटी में बंधे थे। उसकी खूबसूरती का बयान किसी कहानी में किया ही नहीं जा सकता, न ही कलम से लिखा जा सकता है। उसे देख ईवान का दिल उसकी छाती ज़ोरों से उछलने लगा।

पर ज़ारेवना ठीक नहीं दिख रही थी। वह दुबली-पतली और उदास नज़र आ रही थी। ईवान ने ज़ार के सेवादारों में से एक की आस्तीन खींची और पूछा, "ज़ारेवना इतनी उदास क्यों हैं? क्या वे बीमार हैं?"

"तुम बड़े सवाल पूछते हो," सेवादार ने कहा। पर तब ईवान को बता ही दिया कि ज़ारेवना मारूश्का ने खाना ही बन्द कर दिया है। "ज़ार नए-नए बावर्चियों को रखते हैं। पर ज़ारेवना शिकायत करती हैं कि खाने में कोई स्वाद ही नहीं है। अगर वे जल्द ही खाना शुरु नहीं कर देतीं, वे भूख से ही मर जाएंगी।"

ईवान ने ज़ार और उनकी खूबसूरत बेटी को झुक कर आदाब किया। "हुज़ूर," वह बोला। मैं अपना माल आपके देश में बेचना चाहता हूँ।"

"किस तरह का माल है तुम्हारा?" ज़ार ने जानना चाहा। पर ज़ार ईवान की ओर देख भी नहीं रहे थे। उनकी फिक्र से भरी आँखें अपनी बेटी पर ही टिकी थीं, जो कुर्सी पर निढ़ाल बैठी थी। उसका सिर झुका था। पर जब ईवान ने नीचे तक झुकने के बाद अपना सिर उठाया, ज़ारेवना ने उसे देखा।

"नमक है हुज़ूर," ईवान ने अपनी जेब से अपनी छोटी थैली निकाल, थोड़ा सा नमक अपनी हथेली पर गिराया, ताकि ज़ार देख सके। ज़ार ने महीन सफेद दानों को देखा। "नमक? वह क्या होता है भला? मुझे तो सफेद रेत दिख रही है। हमारे देश में रेत की कमी नहीं है, छोटे भाई। हमें उसके लिए पैसे देने की कतई ज़रूरत नहीं है।"

मना करने के बावज़ूद ज़ार ने ईवान को रात के खाने का न्यौता दिया, क्योंकि वह दूर देश से आया था।

ईवान ने ज़ार को शुक्रिया अदा किया और नमक की थैली अपनी जेब में रख ली। तब वह चुपके से ज़ार के रसोई-घर में घुसा ताकि वह बावर्चियों को खाना बनाते देख सके।

रसोई-घर में अफरा-तफरी मची थी। बावर्ची इधर से उधर दौड़ते हुए कुछ इतना स्वादिष्ट बनाने में लगे थे जिसे भूखी ज़ारेवना चाव से खा सके। उन्होंने बत्तख भूनी, तब एक कटोरे में झोल डाला, तब कटी पत्ता गोभी और प्याज़ देगची में डाला सूप बनाया।

पर कुछ कमी रह गई थी। "आप नमक कब मिलाएंगे?" ईवान ने मुख्य बावर्ची से पूछा।

"नमक?" बावर्ची ने सवाल किया। "नमक क्या होता है?"

बावर्ची को अजनबियों की सलाह नापसन्द थी। "तुम बड़े सवाल करते हो," वह बोला। तब ईवान को मीठे की परात से धकिया कर आगे बढ़ गया।

बाद में जब सारे बावर्ची चाँदी के बर्तनों को चमका रहे थे, ईवान ने अपनी जेब से नमक की थैली निकाली और सूप में नमक बुरक कर अपनी लकड़ी की चम्मच से मिला दिया।

खाने के वक़्त ईवान मेज़ के दूसरे छोर पर बैठा था और ज़ारेवना को देख रहा था। बावर्चियों ने नमक डला सूप परोसा। ज़ारवेना ने अपना झुका हुआ सिर उठाया और मुस्कुरा दी। "वाह क्या महक है!" वह बोली और बड़े कटोरे से सूप ले गटकने लगी।

ज़ार खुश हो गया। "यह सूप तो सचमें बेहद स्वादिष्ट है। इतना अच्छा सूप तो मैंने इससे पहले कभी खाया ही नहीं," ज़ार ने कहा। उसने मुख्य बावर्ची को बुलवाया और पूछा उसने सूप में क्या डाला है जिससे वह इतना लज़ीज़ बन सका है।

"हुज़ूर!" बावर्ची अचकचा कर बोला। "मैंने तो उसे ठीक उसी तरह बनाया है, जैसे हमेशा बनाया करता था।"

तब ईवान उल्लास से भर खड़ा हुआ। "हुज़ूर इसमें नमक है। मैंने अपना थोड़ा-सा नमक सूप की देगची में डाल दिया था। बावर्चियों ने उम्दा सूप बनाया था, पर नमक के बिना उसमें कोई स्वाद न था।"

ज़ार यह सुन बेहद खुश हो गया। "मैं तुम्हारा सारा नमक ख़रीद लेता हूँ। तुम्हारे जहाज़ में जितना नमक है उसकी क्या कीमत है?"

"हुज़ूर, पीपे के बदले पीपा। तीन पीपे नमक के बदले आप मुझे एक पीपा सोना, एक पीपा चाँदी और एक पीपा रत्न दे दें। एक बात और है" ईवान ने मुस्कुराती ज़ारेवना की ओर नज़र डाली, जो सूप का दूसरा कटोरा पी रही थी। "मैं आपकी बेटी से शादी करना चाहता हूँ।"

ज़ार अचंभे में पड़ गया। पर ज़ारेवना अपनी जगह से उठी और उसने ईवान का हाथ थाम लिया। "पिताजी," वह बोली, "मैं इस इन्सान के पीछे दुनिया के दूसरे छोर तक जा सकती हूँ।"

सो सौदा तय हो गया। अगले दिन सगाई के घंटे बजे, एक बड़ी दावत हुई। उसमें कई पकवानों में नमक का स्वाद था। सबने भरपेट खाया, खास तौर से ज़ारेवना मारूश्का ने।

अगले पूरे दिन भर ईवान के नाविक जहाज़ के तहखाने से नमक के पीपे उतारते रहे और सोने, चाँदी और रत्नों के पीपे चढ़ाते रहे, जहाँ वे अंधेरे में दमकने लगे।

आख़िरी समय में, जब मारूश्का अपने पिता के गले से लिपट कर अलविदा कह रही थी, ईवान ने मुट्ठी भर नमक एक थैली में डाल अपनी जेब में रख लिया। नाविकों ने लंगर उठाया। पाल और मस्तूल पर लगा झंडा फड़फड़ाने लगा। जहाज़ समुद्र में बढ़ा और उसने ईवान के घर का रुख किया।

ईवान सोचने लगा कि जब मेरे पिता देखेंगे कि मैं लकड़ी की चम्मचों के बदले सोना, चाँदी और रत्न लाया हूँ वे कितना खुश होंगे।

पर वे कुछ ही आगे बढ़े थे - न ज़्यादा पास, न ज़्यादा दूर - कि ईवान को दो जहाज़ों के पाल नज़र आए। वह उन्हें फौरन पहचान गया। ये तो उसके भाईयों, फ्योदोर और वैसली के जहाज़ थे। पर उनकी हालत खस्ता थी। पाल चीथड़े हो चुके थे। एक का मस्तूल टूट चुका था, जिसकी मरम्मत की गई थी।

ईवान ने अपने भाईयों को पुकार कर कहा कि वे अपना जहाज़ छोड़ उसके जहाज़ में आश्रय ले लें। वे अपनी-अपनी डोंगियों को उतार उनमें कूदे और ईवान के जहाज़ की ओर बढ़े और उसमें चढ़ गए। उनके नाविक भी भूख से कमज़ोर और पतले हो चुके थे। वे भी किसी तरह ईवान के जहाज़ तक आ गए।

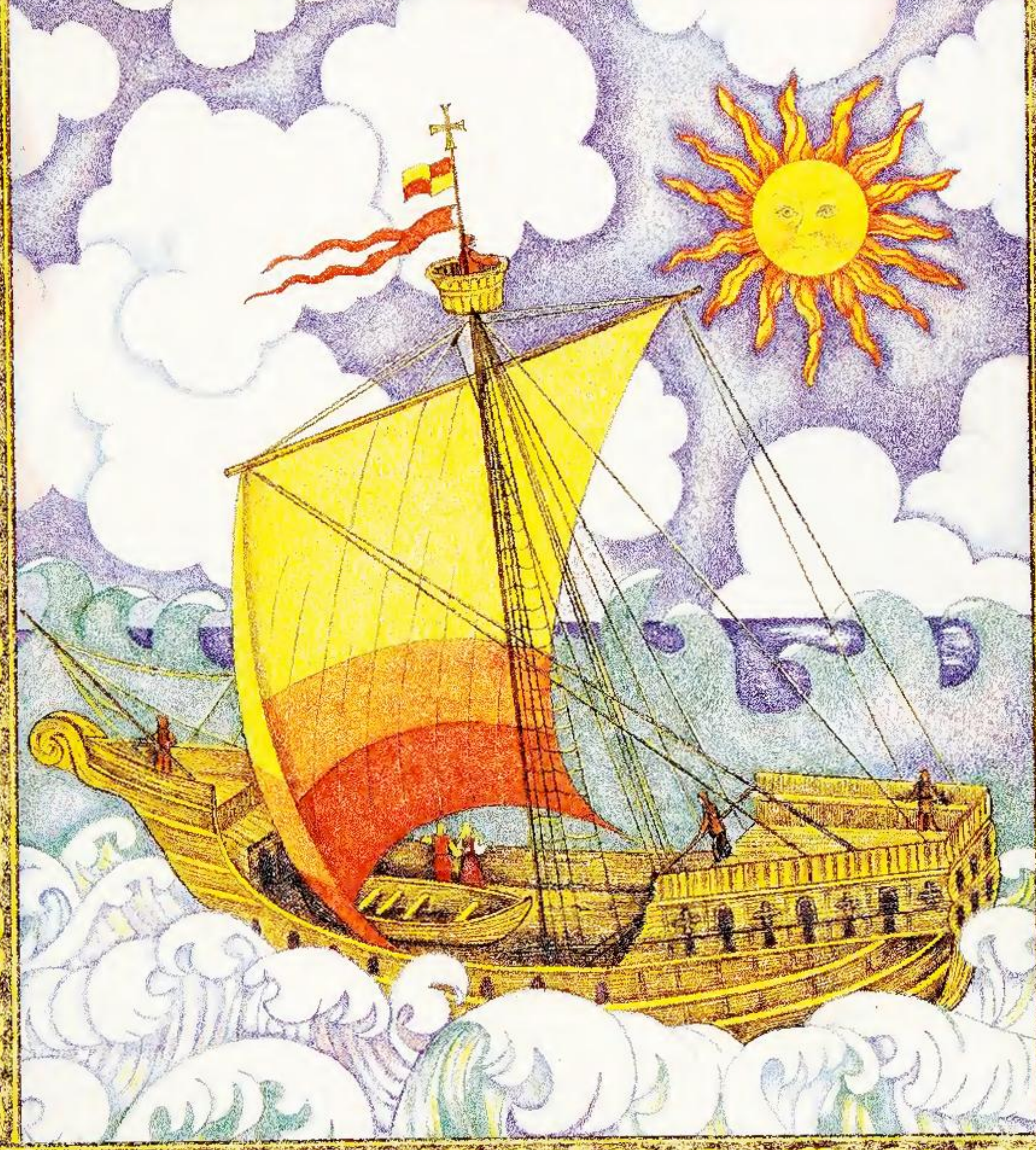

“खुशामदीद मेरे भाइयों,” ईवान बोला। “पर यह तो बताओ कि तुम्हारे सुन्दर जहाज़ों का यह हश्र कैसे हुआ?”

“एक तूफान आया,” फ्योदोर लगभग गुर्रा कर बोला। “उसने मेरे जहाज़ को लगभग तोड़ ही दिया। साथ ही मुझे उत्तर की जगह दक्षिण पहुँचा दिया। मैं एक ऐसे गर्म देश जा पहुँचा जहाँ किसीको खालें नहीं चाहिए थीं। मुझे उन्हें औने-पौने दाम में बेचना पड़ा। ज़ाहिर है काफी नुकसान हुआ।”

“मुझे भी तूफान ने दूसरी दिशा में उड़ा दिया,” वेसली ने मिनमिनाते कहा। “मेरी जहाज़ का मस्तूल टूट गया। मैं दक्षिण पहुँचता उसके पहले ही सारी बर्फ पिघल गई।”

फ्योदोर और वैसली ने ईवान के जहाज़ पर लालची नज़र डाली। “देख रहा हूँ कि हमारे बुद्धू भाई ने पिता के माल का अच्छा सौदा कर लिया है।”

ईवान ने फक्र से भर अपने भाइयों को सोने, चाँदी और रत्नों से भरे पीपे दिखाए। तब खुशी से मुस्कराते हुए ईवान ने अपने भाइयों का परिचय अपनी होने वाली बीवी ज़ारेवना से करवाया। वैसली और फ्योदोर उसकी खुशकिस्मती को देख डाह से भर गए। दोनों ने एक-दूसरे को देखा, कुछ देर फुसफुसाए, तब अचानक ईवान पर झपटे और उसे जहाज़ से नीचे फेंक दिया।

मारूश्का चीखी ओर ईवान के पीछे कूदने को हुई, पर उन्होंने उसे पकड़ कर उसके केबिन में बन्द कर दिया।

इसके बाद फ्योदोर और वैसली ने ईवान की कमाई हुई दौलत के बंटवारे पर बहस की। आख़िरकार वे इस समझौते पर पहुँचे कि फ्योदोर सोना और चाँदी लेगा और वैसली रत्न और ज़ार की बेटी।

पर मारूश्का ने वैसली को इन्कार कर दिया। "नहीं," वह चीखी और तब अपने ईवान को याद कर रोने लगी।

वह बिलख-बिलख कर रोई। उसके नमकीन आँसू उसके गालों से लुढ़क फर्श पर गिरे, तब दरवाज़े के नीचे से बह कर तहखाने तक पहुँचे और उसे भर दिया। कुछ ही समय में जहाज़ धीरे-धीरे पानी में डूबने लगा।

"रोना बन्द करो ज़ारेवना," वैसली ने दरवाज़ा पीटते हुए कहा। "तुम तो जहाज़ को डुबा ही दोगी!"

पर मारूश्का रुक ही नहीं सकी। जहाज़ नीचे, और नीचे धँसता गया और एक ओर लुढ़क गया।

"अपने रत्नों के पीपे फेंका!" फ्योदोर ने चीख कर वैसली से कहा।

"कभी नहीं!" वैसली पलट कर चीखा। "तुम अपना सोना, चाँदी फेंको!"

"तो फिर ज़ारेवना को फेंक दो!" फ्योदोर ने कहा, "उसकी ही गलती से जहाज़ डूब रहा है।"

यह सुन वैसली फ्योदोर पर टूट पड़ा। दोनों झुके हुए जहाज़ की डेक पर गुत्थम-गुत्था हो गए। नाविक अब तक अधीर हो चुके थे। उन्होंने एक-एक कर सोने, चाँदी और रत्नों से भरे पीपे उठाए और उन्हें समुद्र में फेंक दिया। जल्द ही जहाज़ ऊपर उठा और आगे की ओर बढ़ चला।

इस बीच बेचारा बुद्धू ईवान कहाँ था?

वह डूबा नहीं था। जब भाइयों ने उसे जहाज़ से फेंका था, वह फ्योदोर की डोंगी तक पहुँचा और उसने अपने भाइयों के जहाज़ों तक पहुँचने की कोशिश की। पर वह चप्पू चला ही रहा था कि चरमराने की आवाज़ें आईं और दोनों जहाज़ लहरों के नीचे ओझल हो गए।

अब ईवान के पास यह उम्मीद करने के अलावा कोई चारा न था कि वह जल्द ही किसी अनजान टापू तक जा पहुँचे। किस्मत से शाम होने तक वह एक टापू के पास पहुँच ही गया।

उसने अपनी डोंगी किनारे घसीटी, और आगे बढ़ा। वह बेहद प्यासा था। ऊँचे पेड़ों के जंगल के बीचों-बीच उसे ताज़े पानी का एक सोता मिला। उसने हथेलियों का चुल्लू बना जी भर कर पानी पिया।

पर ईवान की मुसीबतें खत्म नहीं हुई थीं। वह टापू दरअसल एक दैत्य का था। ईवान को देखते ही वह उसकी ओर लपका और उसे ठीक से देखने के लिए ऊपर उठा लिया।

ईवान का सिर बादलों से छू गया। उसने सोचा चलो कम से कम यह तो पता चल गया कि आसमान कितना ऊँचा होता है!

''वाह! क्या स्वादिष्ट निवाला है,'' दैत्य ने ईवान को चंगुल में भींचते कहा।

ईवान को अपने चाकू की याद आई उसने अपने कमरबन्द से चाकू निकाला और उसे पूरे दम से दैत्य के अंगूठे पर भोंक दिया। पर चाकू की फलक इतनी छोटी थी कि दैत्य को उसका पता तक न चला।

''मैं तुम्हें एक ही बार में निगल जाऊंगा,'' दैत्य ने अपना मुँह चौड़ा करते कहा।

"अरे रुको तो, मेरा स्वाद ज़रा सा नमक बुरकने से बेहतर लगेगा," ईवान बोला।

उसने अपना हाथ जेब में डाला और नमक निकाल दैत्य के अंगूठे पर उस जगह मल दिया, जहाँ उसने चाकू से भोंका था।

नमक से भारी जलन होने लगी। दैत्य दर्द से बिलबिला उठा। उसने अपने घुटने धरती पर टिकाए और ईवान को पटक दिया। "मेरी मदद करो," वह कराहते हुए बोला। "तुम जो कहोगे मैं करने को तैयार हूँ।"

"मैं फौरन मदद करता हूँ," ईवान कहा। उसने सोते से पानी लिया और दैत्य के अंगूठे पर उलीचा।

दर्द तुरंत ही बन्द हो गया। दैत्य ने कराहना बन्द किया और ईवान को घूरने लगा। "तुम क्या चाहते हो?" उसने गुर्राते हुए पूछा।

"मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे समुद्र पार कर मेरे घर पहुँचा दो," ईवान ने कहा।

"बस इतना ही?" दैत्य ने ईवान को फिर से उठाया और इस बार उसे अपनी जेब में धर लिया। दैत्य ने अपना एक विशाल पैर समुद्र में रखा, तब दूसरा, और यों एक-एक कदम में मीलों पार करता चल पड़ा।

"अरे इस ओर नहीं," ईवान ने कहा। "मेरा घर तो दूसरी ओर है।"

पर दैत्य ने उसकी बात अनसुनी कर दी और अपनी धुन में आगे बढ़ता गया। वह समुद्र के रास्ते महाद्वीपों, वादियों पहाड़ों को पार करने लगा। और आख़िरकार उस टापू तक आया जिसे ईवान अपना घर कहता था। वहाँ उसने ईवान को नीचे उतारा।

"शुक्रिया," ईवान ने कहा। जब दैत्य मुड़ कर जब वापस लौटने लगा वह बोला, "अलविदा!"

खैर, कम से कम मैंने यह तो जान लिया कि दुनिया चपटी नहीं गोल है, ईवान ने सोचा। वह बेताबी से अपने पिता के घर दौड़ा, इस उम्मीद से कि उसके दुष्ट भाई मारूश्का को अपने साथ सुरक्षित घर ले आए होंगे।

और वह सच में वहीं थी। खिड़की से झांकते समय जब उसने ईवान को आते देखा वह बाहर दौड़ी और ईवान के गले से लिपट गई। वह शादी के जोड़े में मोतियों से सजी और भी खूबसूरत लग रही थी।

''तुम बिलकुल सही समय आए हो,'' मारूश्का सुबक कर बोली। ''आज जबरन मेरी शादी वे तुम्हारे भाई वैसली से करवा रहे हैं। सुनो तो घंटें बज रहे हैं। तुम्हारे पिता ने मेरी बात का विश्वास ही नहीं किया कि तुम्हारे भाइयों ने तुम्हें जहाज़ से नीचे फेंक दिया और तुम्हारा जहाज़ चुरा लिया। उन्होंने कहा कि उनका बेटा ईवान इतना बुद्धू है कि वह ज़ारेवना और दौलत को जीत ही नहीं सकता।''

गुस्से भरा ईवान घर में घुसा। उसका भाई वैसली दूल्हे की तरह सजा था। उसके पिता और फ्योदोर भड़कीली पोशाकों में थे जिन पर चाँदी के बटन लगे थे।

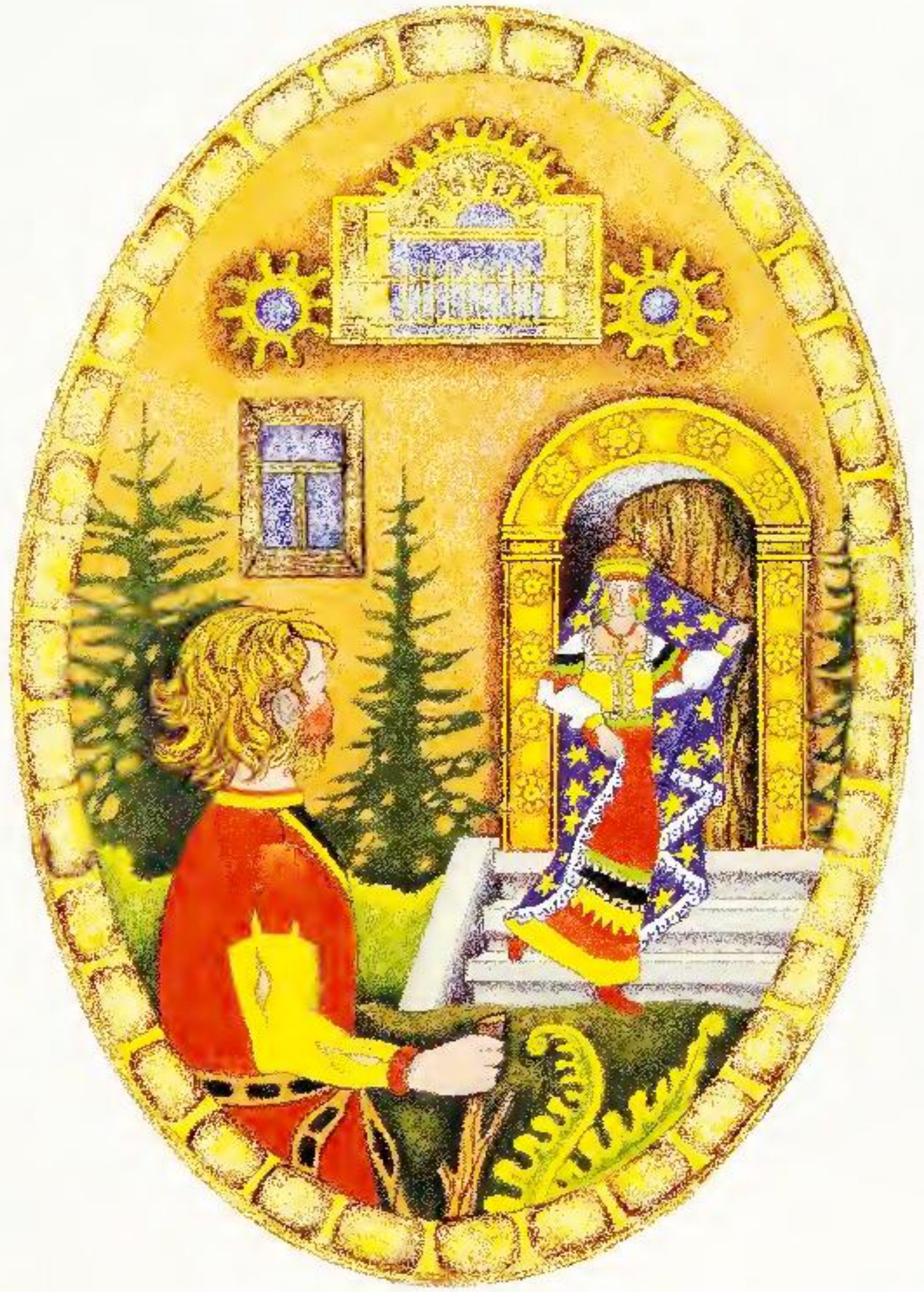

सब ईवान को देख हक्के-बक्के रह गए। क्या वह समुद्र में डूबा नहीं था? "ओह, मेरा प्यारा बेटा," पिता ने उसे गले लगाते कहा। "तुमने इतनी देर कैसे लगा दी? तुम्हारे भाई तो कई सप्ताह पहले घर लौट आए थे।"

ईवान ने अपने भाइयों की ओर देखा। पर वे शर्म से सिर झुकाए खड़े थे, उन्होंने नज़रें नहीं मिलाईं। "शैतान का काम जल्दी का होता है," ईवान ने कहा, "पर खुदा का धीमे-धीमे।" तब उसने मारूश्का का हाथ थामा और पिता की ओर मुड़ा, "यह मेरी होने वाली दुल्हन है। वैसली की नहीं।"

"ले लो अपनी दुल्हन," वैसली खीझ कर बोला। "जो सुबह से रात तक रोती रहे, ऐसी बीवी भला किस काम की?"

"हाँ कर लो इससे शादी," ईवान के पिता ने कहा। "यह भयंकर तरीके से रोती है।"

तब उन्होंने ईवान के फटे-चीथड़े कपड़ों पर ग़ौर किया और सिर हिलाया। "मेरे बुद्धू बेटे, देख रहा हूँ कि तुम भी नाकाम ही रहे। मेरे बेटों के सफ़र के नतीजे के नाम पर दिखाने को कुछ नहीं है। न सोना, न चाँदी, न रत्न।"

"पर पिताजी कुछ और है," ईवान ने अपनी जेब से बचा-खुचा नमक निकाला और अपनी उंगलियों से फर्श पर झड़ जाने दिया। "मैं नज़दीक ही के एक टापू को जानता हूँ जहाँ नमक का पहाड़ है।"

"नमक!" सौदागर चीखा। "शुक्र है खुदा का! तुमने तो कमाल का काम किया है चतुर ईवान। अब से हम नमक का ही व्यापार करेंगे! हम दुनिया के ओर से छोर तक नमक पहुँचाएंगे। नमक तो सोने से भी ज़्यादा कीमती है। नमक के बिना जीवन में स्वाद ही नहीं होता!"

और इस तरह इवान और मारुश्का की शादी हो गई, और व्यापारी ने दुनिया भर में नावों का एक बेड़ा भेजा, जो समुद्र के पार सभी देशों में नमक का स्वाद पहुँचा रहा था।

क्या तुम मेरी कहानी पर विश्वास करते हो? क्या तुम मानते हो कि सचमुच खजाने से भरा एक जहाज था और एक राजकुमारी थी जिसने अपने नमकीन आँसुओं से उसे लगभग डुबो दिया था और एक दानव था जिसने पृथ्वी का चक्कर लगाया था?

खैर, कम से कम मैं तुम्हें यह तो बता सकता हूँ कि नमकीन आँसू सच हैं।

अगली बार जब तुम रोओ, तो आँसुओं को अपने गालों पर बहने दो और अपनी जीभ से उनका स्वाद लो। क्या उनका स्वाद नमकीन नहीं होता?

बिल्ले ने कहानी खत्म की।
वह वापस पेड़ पर चढ़ा।
और एक शाखा पर बैठा।
अपनी पूंछ हिलाते वह गाने लगा:

महिमा गीत

नीला है समन्दर, अनबदला और असीम,
अनन्त है गहराई इसकी प्रकाशहीन और निःशब्द,
जय हो तुम्हारी नीले समन्दर,
तुम हो अनबदले और असीम।

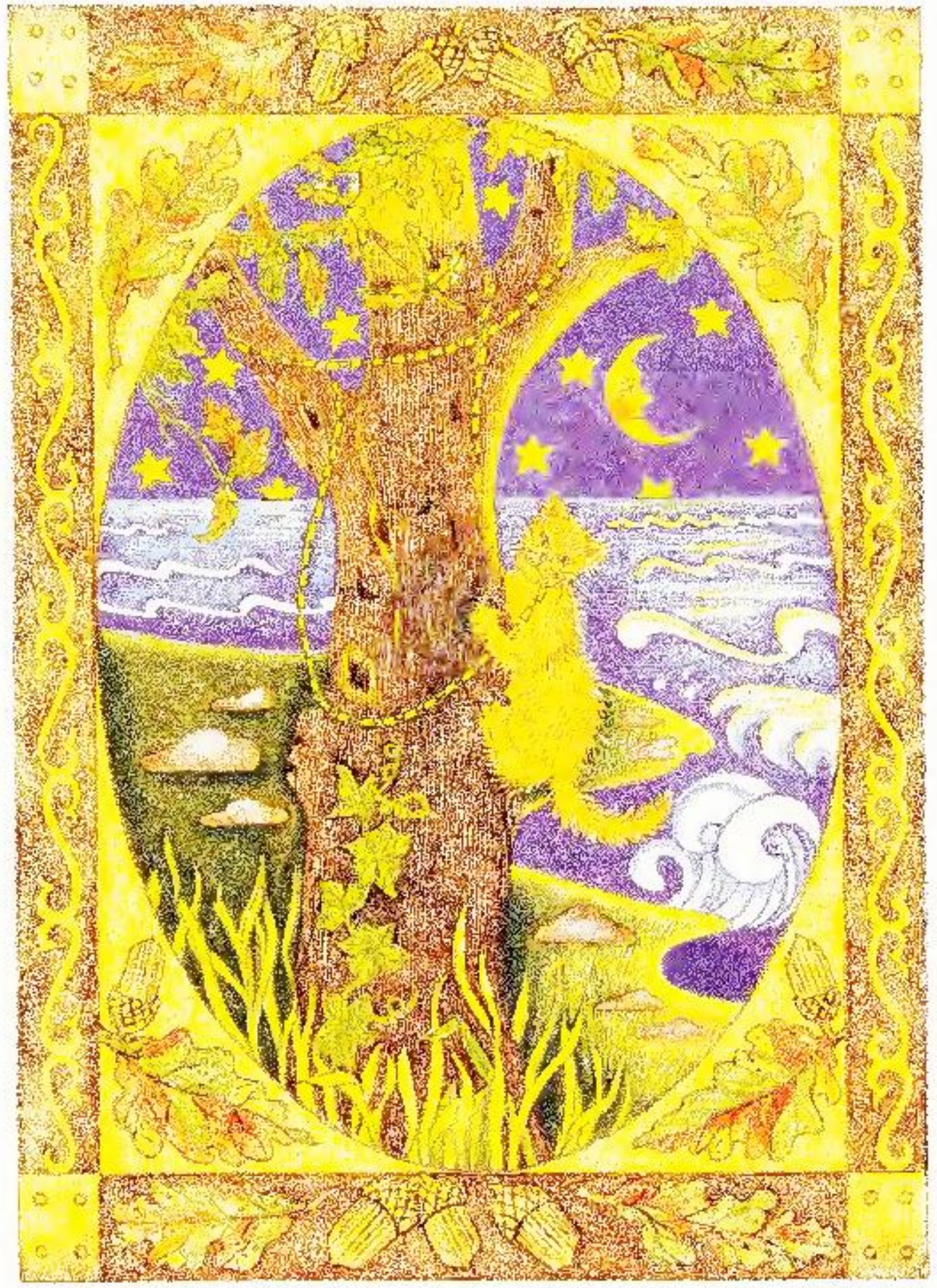

जेन लैंगटन ने बच्चों के लिए कई क़िताबें लिखी हैं। इनमें 1980 की न्यूबरी सम्मान *प्राप्त द फ्लैजलिंग* भी शामिल है। उन्होंने वयस्कों के लिए भी नौ रहस्य कथाएं लिखी है। मिज़ लैंगटन के तीन बेटे हैं। वे अपने पति के साथ मैसाच्युसैटस् में रहती हैं।

इल्से प्लूम को बच्चों की क़िताबों के चित्र बनाने की प्रेरणा अपनी बेटी से मिली। दुनिया भर की लोक कथाओं के प्रति उनका प्रेम उनके नाना ने उनमें जगाया। 1985 में उन्हें एज़्रा जैक कीटस् फैलोशिप दी गई। 1981 में उन्हें *द ब्रेमन टाउन म्युज़िशियनस्* के लिए बनाए चित्रों पर कैल्डेकॉट सम्मान से नवाज़ा गया। उन्होंने कई बाल पुस्तकों के लिए चित्र बनाए हैं, जिनमें *ट्वैल्व डेयस् ऑफ क्रिसमस; द शूमेकर एण्ड द एल्वस्;* तथा *द क्रिसमस विच* शामिल हैं।